28 may_Jan express.pdf - Read-only

जन एक्सप्रेस

janexpressalive

लखनऊ, शुक्रवार, 28 मई, 2021, वर्ष : 12, अंक : 223, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹3.00/-

www.janexpressalive.com/epaper

पशुजन्य बीमारियों से बचाव के लिए जैव सुरक्षा उपाय पर दी जानकारी

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पशु वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार पांडेय ने पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाली पशुजन्य बीमारियों से बचाव के लिए जैव सुरक्षा उपाय पर जानकारी देते हुए बताया कि एवियन इनफ्लुएंजा बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू एवं रेबीज ऐसे कई संक्रामक रोग है जो कि पशुओं से मनुष्यों में फैलते हैं जिन्हे पशु जन्य रोग या जूनोटिक रोग कहते हैं इन रोगो का प्रसार सघन संपर्क वायु, पशुओं के काटने से, कीटों के काटने से होता है। उन्होंने बताया कि अभी तक लगभग 300 प्रकार के जूनोटिक रोगों की जानकारी है जिसमें मनुष्य के लिए सबसे अधिक घातक जूनोटिक रोगों में बर्ड फ्लू एवं स्वाइन फ्लू हैं। इससे बचाव के लिए हमें अपने दैनिक जीवन में जैव सुरक्षा उपायों का ध्यान रखते हुए पशुपालन करना चाहिए।

उन्होंने वृहद फार्म के लिए जैव सुरक्षा उपायों के बारे में बताते हुए कहा कि फार्म जलाशयों के अधिक निकट ना होकर लगभग 500 मीटर की दूरी पर हो। फार्म की आवास इस प्रकार बनाए जाने चाहिए कि उनमें जंगली पक्षी चूहे कीट और पतंगों का प्रवेश ना हो सके फार्म के परिसर में अनावश्यक आगंतुकों को प्रतिबंधित कर देना चाहिए। फार्म पर आने वाले वाहनो को अंदर और बाहर जाते समय समुचित रूप से विसंक्रमित किया जाना चाहिए तथा पशुओं के दाने चारे और उपयोग में लाए जाने वाले उपकरणों को प्रयोग से पहले विसंक्रमित किया जाना चाहिए इसके साथ ही उन्होंने फार्मिंग प्रैक्टिस पशुओं की संदिग्ध मृत्यु की स्थिति मे और बैकयार्ड पोल्ट्री एवं शूकर के लिए जैव सुरक्षा उपाय के साथ एवियन इनफ्लुएंजा और फ्लू के लक्षण और बैकयार्ड मुर्गी और सूकर पालकों के ध्यान देने के लिए जैव सुरक्षा उपायों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress https://worldkhabarexpress.media/

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

अंक : 241 कानपुर नगर

27 मई 2021, गुरुवार

www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhabarexpress.com

मैंने जीत नहीं, असफलताओं को भी फेस किया: प्रियंका

पेज 8

पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाली जूनोटिक बीमारियों से बचाव जरूरी

सीएसए के पशु वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार पांडेय ने दिए टिप्स

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के दीवानी रोड, नगला निरंजन स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के पशु वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार पांडेय ने पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाली पशुजन्य बीमारियों से बचाव के लिए जैव सुरक्षा उपाय पर जानकारी दी। डॉ. पांडे ने बताया कि एवियन इनफ्लुएंजा या बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू एवं रेबीज ऐसे संक्रामक रोग है जो कि पशुओं से मनुष्यों में फैलते हैं। इस तरह से पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाले रोगों को पशु जन्य रोग या जूनोटिक रोग कहते हैं। इन रोगों का प्रसार सघन संपर्क वायु, पशुओं के काटने से, कीटों के काटने आदि से फैलता है। अगर किसी प्रकार से इन रोगों के विषाणु का पशुओं से मनुष्य में संक्रमण रोक लिया जाए तो इस प्रकार की जूनोटिक बीमारियों की रोकथाम हो सकती है। एवं इस प्रकार के उपायों को जैव सुरक्षा उपाय कहते हैं। वर्तमान में अभी तक लगभग 300 प्रकार के जूनोटिक रोगों की जानकारी है। मनुष्य के लिए सबसे अधिक घातक जूनोटिक रोगों में बर्ड फ्लू और स्वाइन फ्लू मुख्य हैं। इन रोगों से पूर्व में भी लाखों लोगों की मृत्यु हुई है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अपने दैनिक जीवन में जैव सुरक्षा उपायों का ध्यान रखें और उसके अनुसार ही पशुपालन करें। उन्होंने बताया कि देश में पशुपालन के दो अलग रूप देखने को मिलते हैं। प्रथम वृहद फार्म एवं दूसरे में पशु पालकों के अपने घर में एक-दो या अधिक पशुओं को रखना। इसलिए जैव सुरक्षा उपाय भी उसी को ध्यान में रखकर करना चाहिए । स्थल का चयनः जल व प्रवासी पक्षी एवियन इनफ्लुएंजा के वाहक होते हैं। इसलिए फार्म के लिए स्थल का चयन इस प्रकार करना चाहिए कि वे जलाशयों के अति निकट न हों। फार्म से जलाशय के बीच कम से कम 500 मीटर की दूरी होनी चाहिए।

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • शुक्रवार • 28 मई • 2021 5

पशुओं से इंसान में फैलने वाले रोगों से बचाव जरूरी

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए के कृषि विज्ञान केंद्र से संबद्ध पशु वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार पांडेय ने बताया कि एवियन इनफ्लुएंजा, बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू एवं रेबीज आदि विभिन्न ऐसे संक्रामक रोग हैं, जो पशुओं से मनुष्यों में फैलते हैं। इनसे बचाव को सुरक्षा उपाय अपनाना जरूरी है।

डॉ. पांडेय के अनुसार उक्त रोगों का प्रसार सघन संपर्क, वायु, पशुओं तथा कीटों के काटने आदि से होता है। वर्तमान में अभी तक लगभग 300 प्रकार के जूनोटिक रोगों की जानकारी है। मनुष्य के लिए सबसे अधिक घातक जूनोटिक रोगों में बर्ड फ्लू एवं स्वाइन फ्लू मुख्य है। उन्होंने कहा कि उक्त रोगों से बचाव के लिए आवश्यक है कि हम अपने दैनिक जीवन में जैव सुरक्षा उपायों का ध्यान रखें और उसके अनुसार ही पशु पालन करें। उन्होंने बताया कि हमारे देश में पशुपालन के दो अलग रूप देखने को मिलते है। प्रथम बड़े फार्म एवं दूसरा पशुपालकों द्वारा अपने घर में एक दो या अधिक पशुओं को रखना। अतः जैव सुरक्षा उपाय भी उसी को ध्यान में रखकर करना चाहिए। बड़े फार्म हेतु जैव सुरक्षा उपाय के तहत स्थल का चयन इस प्रकार करना चाहिए कि वह जलाशयों के अति निकट न हों। फार्म के आवास में जंगली पक्षी, चूहे, कीट, पतंगों का प्रवेश ना होने देना भी आवश्यक है। आवास की दीवारें सपाट एवं पक्के होने चाहिए। फार्म में अनावश्यक आगंतुकों को प्रतिबंधित करना भी आवश्यक है। फार्म के मालिक एवं कर्मचारी एवं अन्य आगंतुकों को भी केवल अपरिहार्य परिस्थितियों में जैव सुरक्षा के उपायों के साथ ही प्रवेश करना चाहिए। प्रवेश करते समय प्रतिरक्षा उपकरण मास्क दस्ताने का उपयोग आवश्यक है। उनके वस्त्रों को प्रवेश और बाहर जाते समय समुचित प्रकाश प्रकार से विसंक्रमित किया जाना चाहिए। प्रवेश द्वार के निकट डिसइनफेक्टेंट घोल का प्रबंध रखना चाहिए। पशुओं के अनावश्यक आवागमन को भी प्रतिबंधित करना जरूरी है। फार्म में आने जाने वाले वाहनों को भी विसंक्रमित किया जाना चाहिए।

डॉ. संजय कुमार पाण्डेय।

सीएसए वैज्ञानिक की सलाह

उपकरण एवं दाने आदि को प्रयोग से पहले समुचित रूप से विसंक्रमित करना जरूरी है। अंडे की ट्रे एवं बॉक्स यथासंभव डिस्पोजेबल होनी चाहिए। पुनः प्रयोग से पहले उनको भी संक्रमित करना अति आवश्यक है। एक गुण व उम्र वाले पशुओं को एक साथ रखना। फार्म पर ऑल इन एवं ऑल आउट का नियम लागू करते हुए पूरा फ्लॉक एक साथ फॉर्म पर लाना चाहिए तथा एक साथ ही फॉर्म से बाहर निकालना चाहिए। मिक्स फार्मिंग जैसे मुर्गी, बत्तख, शूकर आदि एक साथ नहीं पालने चाहिए। नवागंतुक फलाक का भी पूर्णतया स्वस्थ होना आवश्यक है। दो या तीन बार एक बाड़े में नए फ्लाकहर्ड को पालने के उपरांत कुछ समय लगभग 1 माह के लिए बाड़े को खाली छोड़ देना चाहिए। पशुओं की संदिग्ध अथवा अचानक मृत्यु की स्थिति में तुरंत नजदीकी पशु चिकित्सालय को सूचित करना व उनकी सलाह के अनुसार कार्य करना लाभदायक होगा। फार्मिंग प्रैक्टिस में क्वारंटाइन के मानकों के अनुसार कार्य करना चाहिए। बाजार प्रतियोगिताओं से लौटे हुए पशुओं को कुछ दिन के पश्चात ही पुराने पशुओं में मिलाना चाहिए।

पोल्ट्री एवं शूकर के जैव सुरक्षा उपाय के क्रम में बैकयार्ड की उचित दीवार फेसिंग आदि लगाकर सुरक्षा करनी चाहिए एवं मुर्गियों व शूकरों को आपस में लड़ने से रोकना चाहिए।

एवियन इनफ्लुएंजा के लक्षण

अचानक पक्षियों की मृत्यु, शिथिलता एवं भूख में कमी, आंख, सिर व कलगी पर सूजन, जांघों तथा कलगी का बैगनी हो जाना, नाक से स्त्राव, खांसी जुकाम, दस्त, मुलायम कवच वाले अंडे।

ध्यान देने योग्य जैव सुरक्षा उपाय

बीमार पक्षी एवं पशुओं से दूर रहे एवं अपने परिवार के सदस्यों प्रमुख रूप से बच्चों को उनसे दूर रखें। मृत पशुओं या मुर्गियों के शवों को समुचित रूप से चूना आदि डालकर दफनाएं। बीमार पशु पक्षियों को अपने रहने के स्थान से दूर बांधे। मांस आदि का सेवन करते समय यह ध्यान रखें कि मांस पूर्णतया पका हुआ हो। बूचड़ का चाकू अभी भी संक्रमित किया जाना आवश्यक है।

पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाली बीमारियों से बचाव हेतु डॉ. संजय ने दी जानकारी

28/05/2021

कानपुर। सीएसए के दीवानी रोड, नगला निरंजन स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के पशु वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार पांडेय ने पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाली पशुजन्य बीमारियों से बचाव हेतु जैव सुरक्षा उपाय पर जानकारी दी है। डॉक्टर पांडे ने बताया कि एवियन इनफ्लुएंजा ध बर्ड फ्लू स्वाइन फ्लू एवं रेबीज इत्यादि विभिन्न ऐसे संक्रामक रोग है। जो कि पशुओं से मनुष्यों में फैलते हैं।इस प्रकार से पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाले रोगों को पशु जन्य रोग या जूनोटिक रोग कहते हैं। इन रोगों का प्रसार सघन संपर्क वायु, पशुओं के काटने से, कीटों के काटने आदि से फैलते हैं। यदि किसी प्रकार से इन रोगों के विषाणु का पशुओं से मनुष्य में संक्रमण रोक लिया जाए तो इस प्रकार की जूनोटिक बीमारियों की रोकथाम हो सकती है। एवं इस प्रकार के उपायों को जैव सुरक्षा उपाय कहते हैं। वर्तमान में अभी तक लगभग 300 प्रकार के जूनोटिक रोगों की जानकारी है। मनुष्य के लिए सबसे अधिक घातक जूनोटिक रोगों में बर्ड फ्लू एवं स्वाइन फ्लू मुख्य हैं। इन रोगों से पूर्व में भी लाखों लोगों की मृत्यु हुई है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अपने दैनिक जीवन में जैव सुरक्षा उपायों का ध्यान रखें और उसके अनुसार ही पशुपालन करें। उन्होंने बताया कि हमारे देश में पशुपालन के दो अलग रूप देखने को मिलते हैं। प्रथम वृहद फार्म एवं दूसरे में पशु पालको द्वारा अपने घर में एक दो या अधिक पशुओं को रखना। अतः जैव सुरक्षा उपाय भी उसी को ध्यान में रखकर करना चाहिए ।